Dr. Madan Paswan, History.

Lecture No. 36
Date : 31.7.2020

Class : B.A. Part-I (Hons./Sub.) Paper-1st

Topic :- Unit-II (iv) Rise of Magadhan Imperialism.

मगध साम्राज्य का उदय
Hons. + Sub Paper
from page no. 1 to 2.

बौद्ध साहित्य में सोलह महाजनपदों के उल्लेख में मगध, वत्स, कोशल और अवंति का महत्वपूर्ण स्थान था। ये चार सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य थे। यद्यपि इनमें पारस्परिक वैवाहिक संबंध थे, किन्तु ये आपस में संघर्षरत थे। और अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने में व्यस्त थे। इस संघर्ष में अंततः मगध विजयी रहा।

मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले प्रथम राजवंश के विषय में पुराणों तथा बौद्ध ग्रन्थों में अलग-अलग विवरण मिलता है। पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक बृहद्रथ था। वह जरासंध का पिता एवं वसु वैद्य उपरिचर का पुत्र था। मगध की आरंभिक राजधानी वसुमति या गिरिव्रज की स्थापना का श्रेय वसु को था। बृहद्रथ का पुत्र जरासंध एक पराक्रमी शासक था, जिसने अनेक राजाओं को पराजित किया। रिपुंजय इस वंश (बृहद्रथ) का अन्तिम शासक था। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार मगध का प्रथम शासक बिम्बिसार था।

हर्यंक वंश या शिशुनाग वंश (544 ई०पू० से 412 ई०पू० तक):

बृहद्रथ के पश्चात् मगध में जिस नये राजवंश की स्थापना हुई, वह शिशुनाग वंश या हर्यंक वंश के नाम से विख्यात है। पुराण इस वंश को शिशुनाग वंश मानते हैं। बौद्ध एवं जैन ग्रंथ इस वंश को हर्यंक वंश कहते हैं। इस वंश का संस्थापक सुसुनाग या शिशुनाग था। इस वंश का प्रथम महान राजा बिम्बिसार हुआ जिसने मगध साम्राज्य की नींव रखी।

बिम्बिसार (544 - 492 ई०पू०):

बिम्बिसार के प्रारम्भिक जीवन के विषय में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं है। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बिम्बिसार जब 15 वर्ष का था, तभी उसके पिता ने मगध का राजा बना दिया था। दीपवंश में बिम्बिसार के पिता का नाम बोधिस मिलता है जो राजगृह का शासक था। मत्स्य पुराण में उसका नाम क्षेत्रौजस दिया गया है। इतिहासकार डॉ० भंडारकर का मत है कि बिम्बिसार वास्तव में वज्जियों का सेनापति था, जो समय पाकर मगध का सम्राट बन बैठा था। आरम्भ में गिरिव्रज इसकी राजधानी थी, किन्तु बाद में 'राजगृह' को उसने अपनी राजधानी बनाया। बिम्बिसार एक महत्वाकांक्षी शासक था। वह बुद्ध का समकालीन राजा था। जो राजसिंहासन पर बैठने की स्थिति के समय ही उसने विस्तारवादी नीति का अनुसरण किया। सर्वप्रथम उसने अपने समय के प्रमुख राजवंशों से वैवाहिक संबंध स्थापित कर अपनी स्थिति सुदृढ़

(Contd...)

की। इस वैवाहिक-क्रम में सर्वप्रथम उसने लिच्छवि गणराज्य के शासक-चेटक की पुत्री चेलना के साथ विवाह कर मगध की उत्तरी सीमा को सुरक्षित किया। दूसरी वैवाहिक संबंध उसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकोशला के साथ विवाह कर स्थापित किया। इस विवाह के फलस्वरूप उसका न केवल कोशल नरेश के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित हुआ, अपितु दहेज में एक लाख वार्षिक आय का काशी का प्रान्त भी प्राप्त हो गया। इस संबंध में उसने वत्स की ओर से भी मगध को सुरक्षित बना दिया क्योंकि कोशल तथा वत्स मित्र हुए थे। इसके पश्चात् उसने मद्र देश (रावी के समीप) की राजकुमारी क्षेमा के साथ अपना विवाह कर मद्रों का सहयोग तथा समर्थन प्राप्त कर लिया। सम्भव है कि कुछ अन्य राजाओं के राजवंश के साथ भी उसके वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हों। 'महावग्ग' में उसकी 500 रानियों का उल्लेख किया गया है।

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, बिम्बिसार ने ई० पू० 544–492 के बीच 52 साल तक शासन किया। उसके बाद उनके बेटे अजातशत्रु (ई०पू० 492–60) ने शासन किया। अजातशत्रु ने अपने पिता को मार डाला और खुद गद्दी पर बैठ गया। उनके शासनकाल में बिम्बिसार वंश चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। उन्होंने दो युद्ध किए और तीसरे की तैयारी की। उन्होंने अपने पूरे शासनकाल में विस्तार की आक्रामक नीति अपनाई। इससे काशी और कोशल दोनों भड़क गए। फिर मगध और कोशल के बीच लम्बा संघर्ष हुआ। आखिरकार अजातशत्रु युद्ध में विजयी हुए और शांति समझौते के रूप में कोशल नरेश को अजातशत्रु से अपनी बेटी का विवाह और काशी का पूरा अधिकार सौंपने के लिए बाध्य होना पड़ा।

अजातशत्रु को अवन्ती के शक्तिशाली शासक का सामना करना पड़ा। अवन्ती ने कौशाम्बी के वत्सों को हराया था और मगध पर आक्रमण की धमकी दी थी। इस धमकी के कारण अजातशत्रु ने राजगीर की घेराबन्दी शुरू कर दी, जिसके दीवारों के अवशेष अभी भी देखे जा सकते हैं। हालाँकि, उसके जीवन काल में आक्रमण नहीं हुआ।

अजातशत्रु के बाद उदयिन (ई० पू० 460–444) आए। कहा जाता है कि उनका शासन महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने पटना में गंगा और सोन के संगम स्थल पर एक किले का निर्माण किया। यह इसलिए किया गया क्योंकि पटना मगध साम्राज्य के केन्द्र में था, जो इस समय तक उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में छोटानागपुर की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। पटना की स्थिति, जैसा की बाद में उल्लेख है, रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थी।

(Continue.....)